पद ३५ (राग: कालगंडा - ताल: त्रिताल)

श्रीचरणपंकजस्मरणं अनादिनिधनं संसृतिहरणं।।ध्रु.।। द्वैताद्वैत विवर्जितरूपं। मानावमानविहीनं।।१।। सच्चिद्धन परिपूर्ण सुखात्मक ज्ञानमार्तण्ड स्वरूपम्।।२।।